संक्षेपिका

मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ और सुन्दर बनाना साहित्य का लक्ष्य है। मनुष्य जीवन की यथार्थता के अनेक रूपों का उद्‌घाटन साहित्य में होता है । आशा और निराशा, प्रीति और घृणा, हर्ष और विषाद, सम्पन्नता और अभावग्रस्तता, स्वस्थ और रुग्णता आदि मनुष्य जीवन की यथार्थता के अंग हैं। जीवन जितना चलता जाता है यथार्थ उतना हीरूपात्मक हो जाता है । इस अनेक रूपात्मक जीवन यथार्थ में सामंजस्य और एकता की खोज करना और उसकी स्थापना करना साहित्य का मुख्य कर्त्तव्य होता है । इस क्रिया या साधन के द्वारा साहित्यकार आगम या भविष्य का अनुमान कर लेता है और भावी जीवन को अधिक सुंदर और श्रेष्ठ रूप देने में सफल होता है ।

सार्थक साहित्य की कसौटी यही है कि वह मनुष्य की चिंताओं और उसकी समस्याओं से कितना जुड़ा हुआ है और यह भी कि वह व्यक्ति के उन्नयन और उसके हितों के लिए कितना प्रेरणास्पद है । लेकिन हम पिछले कुछ दशकों से यह देख रहे हैं कि हिन्दी में जोड़-तोड़ से उपलब्ध अपने पद और प्रतिष्ठा का लाभ उठा कर कई समीक्षकों ने अपने-अपने गुट और गिरोह बना लिए हैं और उनके लेखे वही लेखक हैं जो हर प्रकार से उनके प्रति समर्पित हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रचेता स्वाभिमानी तथा गुट और गिरोहबाजी से दूर रहने वाले रचनाधर्मियों को हाशिए पर डाल दिया है, भले ही वे अपने रचनाधर्म को पूरी ऊर्जा और संकल्प के साथ वाणी देने में लगे हों ।

देवेश ठाकुर के लेखन को भी इन गिरोहबाज समीक्षकों द्वारा उपेक्षित करने में कोई कोर-कसर नहीं रखी गयी है इतना होने के बावजूद भी देवेश ठाकुर हाशिए के साहित्यकार नहीं हैं। यदि वे ऐसे होते तो उनके व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता पर इतना सारा शोध नहीं किया जाता और न ही उन पर इतने शोध-ग्रन्थ प्रकाशित हो पाते । इन्होंने अनेक रचनाएँ और लेख लिखे जिनमें से एक उपन्यास लेखन भी रहा है । इन्होंने अपने उपन्यासों में बहुत सूक्ष्मता से समाज की उन संस्थाओं को अनावृत्त किया है जो अपने गुह्य देश

में न जाने कितनी विरूपताएँ और विकृतियाँ लिए हुए हैं । यहाँ सामाजिक संस्थाओं की व्यवस्थाओं पर आक्रमण कर इन्होंने पूँजीवाद, मध्यकालीन मानसिकता के अवशेषों की संस्था-बद्ध स्थितियों पर आक्रमण किया है । मौजूदा व्यवस्था में व्यवस्था के बदलने के शुद्ध प्रपंचवादी झूठ पर देवेश ठाकुर के उपन्यास आक्रमण करते हैं। विचारधाराओं-विश्वासों की खोखली व्यवस्थाओं पर अत्यन्त सहज रूप से अपनी विरोधकर्मी प्रवृत्ति से ये उपन्यास विरोध की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसके साथ-साथ उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के तीन वर्गों में से सबसे अधिक मध्यमवर्ग का वर्णन किया है, जिसकी हालत आज शोचनीय बन गई है । इस वर्ग के लोग जागरूक वर्तमान परिस्थितियों से परिचित तथा समस्याओं के मूल कारण को जानने की शक्ति रखते हैं, जिससे उनके अन्दर एक ज्वाला जलती रहती है और वही ज्वाला उनको सामाजिक क्रान्ति करने की प्रेरणा प्रदान करती है ।

समाज के निर्माण में व्यक्ति, परिवार और वर्ग की सक्रियता आवश्यक होती है । साहित्य और समाज परस्पर साथ-साथ चलते हैं। दोनों का एक-दूसरे से अलग अस्तित्व संभव नहीं है । ठीक उसी प्रकार साहित्य और यथार्थ को भी अलग नहीं किया जा सकता। जो साहित्य यथार्थ के जितना अधिक निकट होता है वह उतना ही प्रभावशाली होता है । समाज की परिस्थितियों, सफलताओं, दुर्बलताओं का वास्तविक प्रस्तुतीकरण ही यथार्थ कहलाता है । सामाजिक यथार्थ में मानव मन की विक्षिप्ताओं का चित्रण होता है और उसके उल्लासपूर्ण क्षणों का भी । अंततः यह कहा जा सकता है कि साहित्य और यथार्थ एक-दूसरे की जीवनधारा है । किसी एक के अभाव में दूसरे का जीवन संभव नहीं है जो साहित्यकार अपने साहित्य में यथार्थ को जितना अधिक महत्त्व देता है उसका साहित्य उतना ही अधिक परिष्कृत होता है।

वर्ग किसी समाज का आवश्यक एवं अनिवार्य अंग होता है जिसका निर्माण उस समाज के श्रम, उत्पादन तथा वितरण के साधनों द्वारा होता है । इसके साथ मनुष्य की वंश-परम्परा, शिक्षा, आय, रहन-सहन का स्तर तथा व्यक्ति की प्रतिभा भी उसे विशिष्ट वर्ग का व्यक्ति प्रतिष्ठित करने में सहायक

होती है । अपनी अतलदर्शी प्रतिभा के बल पर मार्क्स को न केवल वर्ग-संघर्ष की भावना को एक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया अपितु समाज के विभिन्न वर्गों का नामकरण करते हुए उसने प्रमुख रूप से तीन वर्गों की कल्पना की है जिनमें 'मध्यमवर्ग' अलग स्वतन्त्र वर्ग के रूप में विस्तार पाता जा रहा है । समाज ने भी तीन वर्गों को माना है जिनमें उच्चवर्ग, निम्नवर्ग और मध्यमवर्ग हैं । विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार मध्यमवर्ग की परिभाषाएँ दी हैं लेकिन समाज में इसके व्यापक प्रभाव को देखते हुए एक सीमित परिभाषा दे पाना निश्चय ही कठिन कार्य है क्योंकि मध्यमवर्ग के कुछ सदस्य एक ओर उच्चवर्ग से मुश्किल से पृथक् किए जा सकते हैं, तो दूसरी ओर निम्नवर्ग से उनका बहुत न्यनू अन्तर रह जाता है । इसलिए मध्यमवर्ग के भी तीन भाग किये गए हैं जिनमें उच्च मध्यमवर्ग, मध्य मध्यमवर्ग तथा निम्न मध्यमवर्ग हैं। इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति, फ्रांस की राज्य क्रान्ति और रूसी समाजवादी क्रान्ति ने विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर काफी प्रभाव डाला है जिससे समाज में वर्ग उत्पन्न हुए तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तन हुए । वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति ने सभी देशों को इतना निकट ला दिया है कि एक देश दूसरे देश से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । भारत के मध्यमवर्ग के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों तथा दोनों युद्धों का बड़ा सहयोग रहा और इसको निरन्तर आगे बढ़ाने का दायित्व अंग्रेजी साम्राज्य, अंग्रेजी शिक्षा तथा पूँजीवादी व्यवस्था पर अधिक है । अंग्रेजों के आगमन ने केवल सांस्कृतिक दृष्टि से ही भारत पर प्रभाव नहीं डाला, वरन् आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया । उन्नीसवीं शताब्दी में विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों का अग्रणी भी यही मध्यमवर्ग रहा है । यह वर्ग विभिन्न प्रकार की विशिष्टताओं के बावजूद निरन्तर समस्याओं से घिरा रहता है जिसका वर्णन प्रेमचंदयुग से आरंभ होकर उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है तथा देवेश ठाकुर ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में सामाजिक वस्तु-स्थिति के अन्तर्गत मध्यमवर्ग के यथार्थ का चित्रण किया है, जो समाज की रीढ़ होता है। विडम्बनाएँ उसके साथ ही अधिक होती हैं । मध्यमवर्ग को न उच्चवर्ग जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं और न वह मध्यमवर्ग जैसा रह सकता है । इसी

कारण अपनी विसंगतियों के मध्य कुण्ठाग्रस्त बन जाता है और विद्रोह करता है। महानगरीय जीवन के यथार्थ का सफलतापूर्वक चित्रण उपन्यासकार ने किया है तथा सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत पारिवारिक विघटन, नारी समस्या, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, सम्बन्धों की शिथिलता, फ्री लव-फ्री सैक्स, वेश्यावृत्ति, युवकों की कुण्ठा, विद्रोह आदि का उचित चित्रण देवेश जी के उपन्यासों में हुआ है । आधुनिक समाज में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण ने संयुक्त परिवार की नींव को हिला दिया है । निरन्तर एक साथ रहने के कारण सदस्यों में वैमनस्य फैलता है और कुछ सदस्यों की टुच्ची मनोवृत्ति संयुक्त परिवार के सदस्यों के बीच दिवार खड़ी कर देती है जिस कारण एकल परिवार बन रहे हैं । पति-पत्नी और बच्चे जिसके कारण बड़ों के संस्कार और संरक्षण से विहीन बच्चे । नौकरी-शुदा पत्नियाँ, जिनका नौकरी करना परिवार के लिए बढ़ती महँगाई में आवश्यक बन गया है । इसके कारण वे आत्मनिर्भर तो बन रही हैं किन्तु घर-बाहर की समस्या खड़ी हो रही है । स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों की पुरानी मान्यताएँ मिट रही हैं तथा पति-पत्नी के रिश्ते-नातों में परिवर्तन आ रहा है । स्त्री-स्वातंत्र्य, धन लालसा, फैशनपरस्ती आदि बातों के कारण फ्री लव, फ्री सैक्स के नाम पर उच्छृंखलता बढ़ रही है तथा होटल संस्कृति विकसित हो रही है। वेश्या-व्यवसाय के नये रूप उजागर हो रहे हैं और ऐसे भ्रष्ट आदर्शहीन, अनैतिक, उच्छृंखल और दमघोटू वातावरण में युवकों में विद्रोही वृत्ति बढ़ रही है । इस प्रकार का वास्तविक चित्रण करके उपन्यासकार ने मध्यमवर्ग के सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है ।

वे एक स्वतन्त्रचेता रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति बड़ी जटिल दिखाई है । निम्न मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह अशान्त रहता है और उसके सारे कार्य पूर्ण नहीं हो पाते । लेकिन दूसरी ओर उच्च मध्यमवर्ग के पास धन तो होता है और उसे सुविधाएँ भी मिलती हैं लेकिन उसे वह सुख नहीं मिल पाता जिसकी उसे तलाश होती है । मध्यमवर्ग की इच्छाएँ असीमित होती हैं, जिससे उनके अन्दर लालच की प्रवृत्ति आ जाती है और वे केवल धन को ही महत्त्व देते हैं, पारिवारिक रिश्ते-नातों को भी इस समय वे भूल जाते हैं । इस वर्ग

के लोग भविष्य के प्रति सचेत होकर धन अर्जित करते हैं और आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं ताकि वे अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सकें । यह वर्ग अच्छे तथा पौष्टिक भोजन के लिए लालायित रहता हुआ भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता । बेकारी या अर्द्धबेकारी इस वर्ग को लंगड़ा बना देती है और अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाये रखने के लिए यह वर्ग दिखावे का आश्रय लेता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसे अन्य लोगों से छोटा समझा जाए । वह चाहता है कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे। इस वर्ग में निम्न मध्यमवर्ग के कुछ लोगों के पास तो न अपना स्वयं का मकान होता है और न ही अधिक धन सम्पत्ति होती है लेकिन उच्च मध्यमवर्ग के पास अपना मकान और सारी सुख-सुविधाओं के सामान होते हैं । फिर भी यह वर्ग अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त रहता है और कुण्ठाएँ तथा परेशानियाँ उसे हमेशा घेरे रहती हैं क्योंकि वर्तमान युग में महँगाई निरन्तर बढ़ रही है जिस कारण इस वर्ग की सारी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती । मध्यमवर्ग को बहुत-सी आर्थिक समस्याएँ हैं जिससे न तो वह अपनी सभी आशाओं-आकांक्षाओं-इच्छाओं की पूर्ति कर पाता है और न ही अपने परिवार को ऊपर उठा पाता है । वह अच्छा और पौष्टिक भोजन भी प्राप्त नहीं कर पाता, जिससे उसे कुण्ठाओं और परेशानियों से ग्रस्त होना पड़ता है क्योंकि वह बेरोजगारी का जीवन-यापन कर रहा होता है और निरन्तर दिखावे का आश्रय लेता है।

देवेश ठाकुर ने वर्तमान भ्रष्ट राजनीतिक स्थितियों का बेबाक चित्रण किया है । इनके अनुसार आजादी के बाद स्वार्थी, अवसरवादी और दाँत निपोरने वाले ही सफल माने जाने लगे हैं । इस भ्रष्ट व्यवस्था को प्रश्रय देने वाले राजनेता हैं । इन राजनेताओं का नैतिक पतन इतना अधिक हो गया है कि वे देश की कीमत पर भी अपना स्वार्थ साधने से बाज नहीं आते । नाना प्रकार के छल-छद्म और दंद-फंद द्वारा वे कुर्सी पर बना रहना चाहते हैं । उनका पूरा समय वोट की राजनीति करने में ही व्यतीत होता है । जाति, सम्प्रदाय या प्रदेश के आधार पर वे लोगों को बाँटकर अपनी राजनीतिक पकड़ बनाये रखना चाहते हैं । दलबदल भी उसी वोट की राजनीति का एक हिस्सा है । नेताओं के इसी स्वार्थी दृष्टिकोण के कारण जनतान्त्रिक व्यवस्था

असफल-सी हो गयी है । उनकी यह भी मान्यता है कि जन-प्रतिनिधियों का शासन नहीं होता क्योंकि इसमें जन का सही प्रतिनिधित्व नहीं होता । जनतन्त्र की इस असफलता का सबसे बड़ा शिकार हुआ है आम आदमी । रचनाकार आम आदमी की राजनीति में सीधी शिरक्त करने की हिमायत करता है । जनतन्त्र की सफलता के लिए उसे प्रशिक्षित किये जाने का विचार भी लेखक ने व्यक्त किया है क्योंकि प्रशिक्षण के बाद ही वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकेगा और संघर्ष की ओर उन्मुख होगा । इन्होंने वर्तमान शासन तन्त्र की पूँजीपतियों से मिली-भगत की कड़ी आलोचना की है तथा जनतन्त्र की असफलता के लिए इस गठबंधन को जिम्मेदार ठहराया है । इसी मिली-भगत में कुछ बुद्धिजीवी एवं पत्रकार भी शामिल हैं । लेखक ने इनके सम्मिलित षड्यन्त्र का चित्रण करते हुए नेताओं में चारित्रिक दृढ़ता की आवश्यकता पर बल दिया है । इस भ्रष्ट व्यवस्था में पिस रहे शोषित-पीड़ित लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति स्पष्ट करते हुए इन्होंने सक्रिय रूप में व्यवस्था-विरोध का संकेत दिया है । इसके लिए इन्होंने संगठित होने पर भी जोर दिया है । इस तरह इन्होंने समूची राजनीति में व्याप्त भ्रष्ट स्थितियों को चित्रित किया है तथा उनके विरूद्ध सक्रिय संघर्ष के लिए चिंतन और व्यवहार में सामंजस्य की आवश्यकता पर बल दिया है ।

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्ग के धार्मिक एवं दार्शनिक यथार्थ को भी बड़े ही अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। उन्होंने दिखाया है कि मध्यमवर्गीय नारी पर अपने संस्कारों के कारण ऐसे प्रभाव पड़े हैं जिसके कारण वह भीड़-भाड़ और व्यस्तता की जिन्दगी स्वीकार नहीं कर पाती और मजे की जिन्दगी जीना चाहती है जिसमें किसी भी प्रकार के बन्धन न हों । मध्यमवर्गीय पुरुष संस्कारों के कारण एक तरफ तो सीधी-सादी जिन्दगी जीना चाहता है लेकिन वह भी उसे नहीं मिल पाती और उसे अपनी पूरी जिन्दगी दु:खों में व्यतीत करनी पड़ती है तो दूसरी ओर उच्च मध्यमवर्गीय व्यक्ति सेक्स को ही अपना जीवन मानता है और किसी भी बात को वह बेझिझक कह देता है और पैसों के बल पर दूसरे लोगों पर अपना दबाव बनाना चाहता है। इस वर्ग के लोग चिंतनशील प्रवृत्ति के होते हैं तथा वे किसी भी वस्तु

को देखकर चिंतन-मनन करते हैं । किसी भी बात को देखकर या सुनकर भविष्य में क्या होने वाला है, उसकी आशंका उन्हें हो जाती है और वे अपशकुन-शकुन के चक्कर में पड़ जाते हैं और भविष्य के प्रति चिंतित हो जाते हैं जो उनकी निराशा का कारण होता है जिससे उनका जीवन कष्टमय और दूभर हो जाता है । ये लोग पाप के फल में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि बुराई का फल हमेशा बुरा होता है । इसलिए मनुष्य को सदा अच्छे कार्य करने चाहिये । उनमें जीवन-दर्शन की अपार भावना होती है । वे जीवन को अच्छी प्रकार से समझने की शक्ति रखते हैं और जीवन में आने वाले दु:खों और कष्टों का निवारण करने की भरपूर कोशिश करते हैं । इस वर्ग के लोग भाग्य पर भी विश्वास करते हैं और जो कुछ उनके पास है, उसे भगवान का दिया और अपना भाग्य मानते हैं । किसी भी प्रकार की असफलता या दु:ख को वे अपने भाग्य में होना मानते हैं । ईश्वर के प्रति भी उनमें आस्था-अनास्था दोनों हैं लेकिन उनकी अनास्था किसी घटना को देखकर या कष्टमय जीवन में आस्था का रूप धारण कर लेती है । वे ईश्वर को ही अपना सब कुछ मानते हैं । उनकी शक्ति मे कष्टमय जीवन जीने की प्रवृत्ति होती है और वे अपने ईश्वर के लिए कुछ भी करने के लिए हर समय तैयार रहते हैं और समय-समय पर हवन, तीर्थ यात्राएँ आदि भी करते रहते हैं ।

मनोवैज्ञानिक यथार्थ से तात्पर्य उन मानसिक परिस्थितियों से है जो एक विशिष्ट काल में एक व्यक्ति को अप्रत्याशित आचरण के लिए बाध्य कर देती हैं । मध्यमवर्गीय लोगों में सेक्स की भावना रहती है और वह परिस्थितियों के कारण निरन्तर उभरती रहती है लेकिन अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर यह वर्ग इसे दबा देता है और कई बार तो पैसे पास न होने के कारण भी इसे ठुकरा दिया जाता है । सेक्स के कारण ही कई बार इन्हें बुरे परिणाम भी भुगतने पड़ते हैं । शादी से पूर्व किया गया सेक्स मध्यमवर्गीय परिवारों में टूटन लाता है । मध्यमवर्गीय लड़का-लड़की प्रेम करते हैं तो कई बार लड़की को मजबूरीवश अपने प्रेमी के दोस्त से भी सेक्स करना पड़ता है हालांकि लड़की की इसमें कोई इच्छा नहीं होती । सेक्स की अतृप्ति भी इस वर्ग के

लोगों में दिखलाई पड़ती है । ये लोग सेक्स करना चाहते हैं लेकिन अपने संस्कारों के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते, जिससे वे अतृप्त रह जाते हैं और उनमें कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है । सेक्स के कारण मध्यमवर्गीय व्यक्ति को मानसिक संघर्ष भी करना पड़ता है, जिस कारण वह हर समय दु:खी रहता है। इन लोगों में सेक्स कुण्ठा की प्रतिक्रिया भी देखने को मिलती है । जब सेक्स न कर पाने के कारण वे कुण्ठा का शिकार हो जाते हैं तो वे किसी भी औरत के नजदीक होने पर उसे छेड़ना आरम्भ कर देते हैं । सेक्स के कारण ही मध्यमवर्गीय लोगों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस वर्ग के लोग सेक्स करते हैं जिस कारण इन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं तथा दूसरी ओर ये अच्छा बनने की कोशिश भी करते हैं लेकिन इनकी समस्याएँ सेक्स के कारण ही निरन्तर बढ़ती जाती हैं, जिससे ये लोग परेशान रहते हैं और अपना जीवन अच्छे ढंग से नहीं जी पाते। सेक्स का उदात्तीकरण भी हमें इनमें देखने को मिलता है । इन लोगों में अहं की भावना भी होती है जो कई बार तो इनके लिए विनाशकारी सिद्ध होती है तो कई बार इन्हें रचनात्मक शक्ति भी प्रदान करती है । कई प्रकार की परिस्थितियाँ इनमें हीन-भावना भी पैदा कर देती हैं जिसके कारण इनके अन्दर हीनताग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है और इनका जीवन निराशा और दु:ख में व्यतीत होता है ।

लेखक ने मध्यमवर्गीय सांस्कृतिक यथार्थ के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न बिन्दुओं को बड़े ही अच्छे ढंग से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है । मध्यमवर्ग पढ़ा-लिखा होता है और हर बात को सोच-समझकर ही कहना चाहता है । उसकी वार्तालाप एवं संभाषण शैली ऐसी होती है जिसमें वह अंग्रेजी भाषा के शब्दों का बीच-बीच में प्रयोग अवश्य करता है क्योंकि इसके द्वारा उनके बोलने के लहजे में दम आता है और वे अपने विचारों को प्रभावी बनाते हैं ताकि समाज में उनका सम्मान बढ़े और उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त हो। ये लोग अपने जीवन में सभी प्रकार के त्यौहार-उत्सवों को मनाते हैं तथा उसमें रंग जमाने की पूरी-पूरी कोशिश करते हैं लेकिन शराब, जुआ आदि कारणों से इनके रंग में भंग डल जाता है । बच्चे के जन्म के अवसर पर ये लोग शुभ दिन

निश्चित करते हैं जिसमें बच्चे का नामकरण-संस्करण होता है । इन लोगों द्वारा नाम बड़े सोच-समझकर, बड़े ही आधुनिक तरीके का और जीवन में प्रभाव डालने वाला रखा जाता है ताकि वो जीवन में नाम के अनुसार विद्वता और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके । मध्यमवर्गीय लोगों में विवाह से संबंधी विविध रीतियाँ होती हैं जिनमें विवाह से पूर्व, विवाह में तथा विवाह के पश्चात् बहुत-सी रीतियाँ निभाई जाती हैं और इसी प्रकार किसी की मृत्यु होने पर भी विभिन्न प्रकार की रीतियाँ निभाई जाती हैं, जो मरने वाले की आत्मा को शान्ति देती हैं । इस वर्ग के लोगों के आचार एवं व्यवहार को लें तो इनको अपने पारिवारिक माहौल से ही बहुत कुछ सीखने को मिलता है । ये लोग अपने परिवार से ही व्यवहार करना सीखते हैं तथा वहाँ के वातावरण से उनका व्यवहार बनता है । इस वर्ग के लोग समय, स्थान और व्यक्ति देखकर ही उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं । मध्यमवर्गीय पुरुष तो सीधी सादी वेश-भूषा पहनना पसन्द करते हैं लेकिन वह आकर्षित करने वाली हो । इस प्रकार की वेशभूषा महँगी होती है । दूसरी ओर मध्यमवर्गीय स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी होने के कारण जीन्स, टॉप और ऊँची सैंडिल पहनना पसन्द करती हैं तथा इसके साथ-साथ वे लहंगा-चोली, साड़ी और कुर्त्ता सलवार पहनना भी उन्हें अच्छा लगता है । इस वर्ग के लोग खान-पान का विशेष ध्यान रखते हैं । इन लोगों की खाने की अपनी-अपनी पसन्द होती हैं और ये लोग किसी भी खाने की वस्तु की वरायटी भी देखते हैं । उन्हें फास्ट-फूड और कोल्ड-ड्रिंक्स आदि चीजें बहुत पसन्द होती हैं । वे किसी मेहमान के आने पर उसे अच्छे-से-अच्छा भोजन परोसना चाहते हैं ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े ।

अन्त में कहा जा सकता है कि साहित्य का लक्ष्य मानव जीवन को श्रेष्ठ और सुन्दर बनाना होता है जो किसी यथार्थवादी लेखक के द्वारा ही संभव है क्योंकि यथार्थ लेखन द्वारा ही समाज को सच्ची घटनाओं से परिचित करवाया जा सकता है और लोगों को घटना घटने से पहले ही सचेत कर दिया जाता है । यही कार्य देवेश ठाकुर ने अपने साहित्य में किया है । वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं तथा उन्होंने विविध विधाओं पर अपनी लेखनी

चलाई लेकिन सबसे अधिक प्रसिद्धि उन्हें उपन्यास लेखक के रूप में मिली । उन्होंने समाज के तीन वर्गों में से सबसे अधिक मध्यमवर्ग के यथार्थ पर लिखा है । उन्होंने इस वर्ग के हर पहलू को बड़े गौर से देखा और परखा है । इन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से मध्यमवर्गीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एव दार्शनिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक यथार्थ को समाज के समक्ष प्रस्तुत करके उनकी मानसिक पीड़ाओं, कुण्ठाओं, दु:खों, परेशानियों, कठिनाईयों तथा समस्याओं से अवगत करवाया है । अपने इस प्रकार के साहित्य के कारण वे निरन्तर इस समाज के लोगों के बीच इसी प्रकार का साहित्य रचते रहेंगे और इसके माध्यम से लोगों के जीवन में आने वाली समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते रहेंगे और पाठक वर्ग इससे निरन्तर लाभान्वित होता रहेगा ।